This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **525**

Unique Paper Code : **205240** **D**

Name of the Paper : **Hindi B**

Name of the Course : **B.A. (Programme)**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न--पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. आजादी के बाद हिन्दी भाषा के विस्तार का वर्णन कीजिए।

अथवा

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी के योगदान पर विचार कीजिए। 9

2. राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति पर विचार कीजिए।

अथवा

संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालिए। 9

3. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(*i*) राष्ट्रभाषा का महत्व

(*ii*) मानक हिन्दी की विशेषताएँ।

P.T.O.

4. संचार माध्यम के विविध रूपों का परिचय देते हुए प्रिंट मीडिया की भाषा का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

समाचार-पत्रों की संपादकीय भाषा की विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 9

5. रेडियो पर प्रसारित होने वाले मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों की भाषा का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा के अंतर को स्पष्ट कीजिए। 9

6. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(*i*) विज्ञापन की भाषा

(*i*) फीचर की भाषा। 7

7. किन्हीं **पाँच** का हिन्दी प्रतिरूप लिखिए : 5

(*i*) Autonomous

(*ii*) Infrastructure

(*iii*) Hold your mouth

(*iv*) Brain drain

(*v*) To look blank

(*vi*) Application may be rejected

(*vii*) Kindly acknowledge

(*viii*) Seen and returned currency

8. कार्यालयी क्षेत्र में टिप्पण के महत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

एक अच्छे प्रारूपण की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 5

9. अपने क्षेत्र के अस्पताल में व्याप्त गंदगी को दूर करने के लिए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए।

अथवा

रेडियो के लिए समाचारवाचक पद हेतु आवेदन के लिए स्ववृत्त (बायोडाटा) तैयार कीजिए। 5

10. (1) किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : 6

(*i*) महानगरीय जीवन में बढ़ती असुरक्षा की भावना

(*ii*) महाकुंभ

(*iii*) मँहगाई की मार

(*iv*) भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष।

(2) किसी **एक** विषय का पल्लवन कीजिए : 4

(*i*) जल ही जीवन है।

(*ii*) पराधीन सपनेहु सुख नाहीं

(*iii*) समय ही धन है

(*iv*) कर्म ही पूजा है।

अथवा

निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण करते हुए उपयुक्त शीर्षक दीजिए :

पश्चिम की संस्कृति सतत चिंताग्रस्त है। उसमें आत्मीयता, अपनत्व और कृतज्ञता नहीं है। पश्चिम का मन अपनी सत्ता की रक्षा और अपने स्वयं के अहंकार की रक्षा के लिए सदैव चेष्टारत और चिंतित रहता है, अत: जो कुछ भी उसके संपर्क में आता है, जो भी उसके अनुभव में आता है, जो भी अनुभूतियाँ उसे होती हैं, वह उनके प्रति सदैव सशंकित रहता है। पश्चिम के इस शंकालु मन ने उसे प्रगति तो दी, पर आत्म एकत्व की क्षमता नहीं दी। पश्चिम के मन में एक द्वंद्व है। उसका समस्त चिंतन द्वंद्व पर आश्रित है। तर्क से ही वह हर समाधान को प्राप्त करना चाहता है। पश्चिम के लिए तर्क ही ज्ञान है, तर्क ही बौद्धिक प्रतिभा है और तर्क ही वास्तविक ऊर्जा है; पर तर्क के प्रति भारतीय मन ऐसा नहीं सोचता। 10